REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2024

बैगा जनजाति एवं उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (मध्य प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन)

डॉ. मीनाक्षी मेरावी
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

बैगा जनजाति मध्य प्रदेश की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है, जो विशेष रूप से छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में पाई जाती है। उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए हम उनके जीवनशैली, परंपराओं, और भौगोलिक स्थितियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। बैगा जनजाति मुख्यतः मध्य प्रदेश के बैगा क्षेत्र, जबलपुर, डिंडोरी, और सागर जिलों में निवास करती है। इसके अलावा, वे छत्तीसगढ़ के भी कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं। यह क्षेत्र पहाड़ी और वन क्षेत्रों से भरा हुआ है, जो बैगा जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली के लिए उपयुक्त है। बैगा जनजाति की सामाजिक संरचना एक पारंपरिक ग्राम व्यवस्था पर आधारित है। ग्राम समुदाय में मुख्य रूप से परिवारों के छोटे समूह होते हैं, और समाज में बुजुर्गों और प्रमुख व्यक्तियों को विशेष सम्मान प्राप्त होता है। वे अपने सामाजिक निर्णयों के लिए अक्सर ग्राम पंचायतों का उपयोग करते हैं। पारंपरिक रूप से बैगा लोग कृषि और वन आधारित जीविका पर निर्भर होते हैं। वे वन उत्पाद जैसे कि बांस, लकड़ी, और औषधीय पौधों का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, वे कुछ हद तक शिकार और मछली पकड़ने का भी काम करते हैं।

मुख्य शब्द – बैगा जनजाति, विशेष पिछड़ी जनजाति, सामाजिक एव सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

परिचय –

हमारी पवित्र पावन भूमि में विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं। भारत के पर्वतीय एवं वन्यक्षेत्र में अनेकों ऐसे मानव समूह निवास करते हैं, जो कि मानव सभ्यता की विकास की दृष्टि से प्रारंभिक सोपानों से आगे नहीं बढ़ पाये हैं एवं जो हजारों वर्षों से शेष विश्व की सभ्यता से दूर अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की पहचान बनाये हुये हैं। इन्हें आदिवासी, कबीली, आदिमवासी, जनजाति, वन्यजाति आदि विभिन्न उपनामों से संबोधित किया जाता है।

आज विश्व में दो समाजों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक वह समाज जो आधुनिकता के शिखर की ओर तेजी से बढ़ता जा रहा है, दूसरा वह समाज है जो परंपरा के धरातल पर रूका हुआ है। सामान्यतः लोग "जनजाति तथा आदिवासी" शब्द का अर्थ पिछड़े हुये और "असभ्य मानव समूह" से समझते हैं जो एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुये अपनी सामान्य भाषा बोलते हैं। मध्य प्रदेश की जनसंख्या की विशेषता है, कि यहाँ अनुसूचित जनजातियों का बाहुल्य है। भारत में मध्य प्रदेश की एक तिहाई से भी अधिक आबादी अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की है। है। प्रदेश में गोंड, बैगा, भील, कोरकू, भारिया, हल्बा, कोल, माड़िया आदि जनजातियाँ तथा इनकी उपजातियाँ निवास करती हैं। "जनजाति" शब्द अंग्रेजी के Tribe" शब्द या हिन्दी

रूपांतर है। सामाजिक मानव शास्त्रियों तथा मानव वैज्ञानिकों ने इन्हें आदिम (प्रिमिटिव) Premetive पद दिया है जिसका सामान्य अर्थ "प्राचीन" है। संविधान के **अनुच्छेद 342** के अनुसार राष्ट्रपति के द्वारा आम सूचना के माध्यम से अनुसूचित जनजाति को उल्लेखित किया गया है। बैगा समाज में विवाह परंपराएं बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। विवाह को समाज में महत्वपूर्ण घटना माना जाता है और इसमें पारंपरिक रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है। परिवार व्यवस्था में अक्सर संयुक्त परिवार प्रथा अपनाई जाती है। हालांकि बैगा जनजाति की सांस्कृतिक विरासत समृद्ध है, उन्हें कई विकासात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक सेवाओं की कमी। इसके अतिरिक्त, उनके पारंपरिक जीवनशैली में बाहरी प्रभाव और आधुनिकता की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है।

शाोध प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति आनुभाविक और प्रतिदर्श आधारित रही है। अध्ययन कार्य हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का संकलन किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची आधारित प्रश्नावली विधियों का प्रयोग कर क्षेत्र से आँकड़े एकत्रित किए गये हैं द्वितीयक स्रोतों से भी जानकारी प्राप्त की गई है, जिनमें मुख्यतः प्रकाशित एवं अप्रकाशित लेखों, संदर्भित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, वेबसाईट से सूचनाएँ एकत्रित किए गए हैं।

मध्यप्रदेश में विशेष पिछडी जनजाति (बैगा) –

मध्य प्रदेश की जनसंख्या की विशेषता है, कि यहाँ अनुसूचित जनजातियों का बाहुल्य है। भारत में मध्य प्रदेश की एक तिहाई से भी अधिक आबादी अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की है। वर्ष 1991 की जनगणना अनुसार प्रदेश की कुल आबादी 37.28 प्रतिशत इन वर्गों की है। इनमें 23.37 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के लोग निवास करते हैं। देश की सर्वाधिक जनसंख्या मध्य प्रदेश में निवास करती है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में कुल 1,22,33,474 जनजातीय जनसंख्या निवासरत् थी जो वर्ष 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार 1,53,16,784 है। प्रदेश में गोंड, बैगा, भील, कोरकू, भारिया, हल्बा, कोल, माड़िया आदि जनजातियाँ तथा इनकी उपजातियाँ निवास करती हैं।

मध्य प्रदे**श** के 23 जिलों में बैगा, भारिया एवं सहरिया तीन वि**शे**ष पिछडी जनजातियां निवास करती हैं। बैगा जनजाति मध्य भारत की प्रमुख जनजातियों मे गिनी जाती है। यह जनजाति मध्यवर्ती सतपुड़ा की पहाड़ियों, पठारी, घाटियों के निर्जन व सघन वनों, ऊँचे उठे भागों में समूहों में निवास करती है। यह क्षेत्र उत्तरी दक्षिणी और दक्षिणी पूर्वी मैदानों में विभक्त है। नर्मदा एवं उसकी सहायक धाराएँ पश्चिम की ओर प्रवाहित होती हैं तथा वैनगंगा नदी की सहायक धाराएँ निकलकर इसमें समाहित होकर दक्षिण की ओर गोदावरी में मिलती है। इस ऊँचे उठे भू–भाग की सीमाएँ मुख्य रूप से मंडला, बिलासपुर, बालाघाट, शहडोल, राजनांदगांव एवं उमरिया एवं डिण्डोरी प्रशासनिक जिलों से बनती है। इस क्षेत्र को वर्षों पूर्व "बैगा देश" और वर्तमान में "बैगा प्रदेश" के रूप में सीमांकित किया जाता है।

बैगा जनजाति की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था –

मध्य प्रदेश की जनजातियों में बैगा जनजाति समूह अपनी आदिम पहचान रखता है। बैगा स्वयं को जंगल का राजा कहते हैं। बैगा आदिवासी अपनी विशेषताओं के साथ राज्य के विभिन्न अंचलों में निवास कर रहे हैं। बैगा मध्य प्रदेश की सबसे पिछड़ी जनजातियों में से एक है। बैगा समाज प्राचीन समय से सामूहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बैगा जनजाति में पितृ मूलक परिवार की परम्परा है जिसमें पिता मुखिया होता है। बैगाओं में सामूहिक रूप से संगठित रहने की परम्परा है तथा इनका सामाजिक संगठन आंतरिक सुव्यवस्थित रहता है साथ ही संगठन की अपनी एक इकाई होती है। बैगा की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः कृषि व लघुवनोपजों के संग्रहण पर निर्भर है। ये लोग अपनी अर्थव्यवस्था के लिए प्रकृति पर निर्भर होते हैं।

बैगा जनजातियों का सांस्कृतिक पक्ष परम्परागत रीति–रिवाजों, प्रथाओं, लोक कलाओं से परिपूर्ण है। ये जनजाति नृत्य व संगीत प्रिय होते हैं और इनका अपना प्राचीन संगीत होता है। बैगा जनजाति के संबंध में उपलब्ध साहित्य के पुनरावलोकन से यह तथ्य स्पष्ट होता है, कि उनके आचार–विचार, रहन–सहन, सामाजिक

व्यवस्था, संस्कृति, रीति–रिवाज आदि में जो परिवर्तन आए हैं उनमें बहुत धीमी गति से उनका विकास हुआ है। भारत सरकार आदिवासियों एवं पिछड़े वर्गों के उत्थान हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित कर रही है। मध्य प्रदेश में आदिवासी जनसंख्या के बाहुल्य को दृष्टिगत रखते हुए मध्य प्रदेश सरकार इस दिशा में विशेष प्रयास कर रही है। वर्तमान समय में जबलपुर संभाग में 6 जिलों में आदिवासी विकास अभिकरण संचालित किया गया है जिनमें– 1. वृहत परियोजना मण्डला, 2. निवास, 3. डिण्डोरी, 4. तामिया, 5. लखनादौन एवं 6. बैहर परियोजनाएँ मुख्य है।

बैगा जनजाति का परम्परागत सांस्कृतिक पक्ष –

जनजातीय समाज में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से आदिवासी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें संगीतात्मकता, भावनात्मकता, प्रेम, मान, विरह, परिहास, उल्लास, विश्वास, प्रथाओं रीति–रिवाजों आदि आचार–विचारों की अनुभूति युक्त मार्मिक संकेतात्मक उद्‌गार होता है। बैगा जनजातियों का सांस्कृतिक पक्ष परम्परागत रीति–रिवाजों, प्रथाओं, लोक कलाओं से परिपूर्ण है। ये जनजाति नृत्य व संगीत प्रिय होते हैं और इनका अपना प्राचीन संगीत होता है। जंगली वातावरण में रहने के कारण इन्होंने प्रकृति के संगीत से काफी निकटता का संबंध बनाया है।

बैगा जनजाति में गौत्र चिन्ह या टोटम प्राकृतिक परिवेश में रहने के कारण ही फल, फूल, वृक्ष, पशु, पक्षी, पर्वत, नदी, झरने, देवता इत्यादि से संबंधित होते हैं। इन्हें अपने गोत्र के प्रति अत्यधिक लगाव होता है। विवाह के समय ये अपने गोत्र चिन्हों के अनुसार संबंधित बैगा से विवाह करते हैं जो कि इनके टोटम से संबंधित होते हैं।

मनव विज्ञान की दृष्टि से जिस आदिम जनजाति का सबसे अधिक उल्लेख होता है, वह मध्य प्रदेश में मैकल पर्वत की कंदरावों एवं घने साल वृक्ष के शीतल सुरम्य वन स्थल में स्थित एक हजार से दो हजार मीटर के मध्य ऊंची पर्वत श्रेणियों पर नर्मदा नदी के किनारे बसी बैगा जनजाति है। आधुनिकता के दौर में बैगा जनजाति की संस्कृति में शी आधुनिकता का समावेश हो रहा है। बेगा अब सघन वन, कंदराओं तथा शिकार को छोड़ कर मैदानी क्षेत्रों में रहना और कृषि कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। सरकार द्वारा इन्हें विकास के मुख्य आयामों से जोडकर आगे लाने का प्रयास भी कर रही है।

जनजातीय समस्याएँ एवं सुझाव –

जनजातीय समस्याएँ वास्तव में विस्तृत और जटिल समस्याएँ हैं, जो उनके रहन–सहन, रीति–रिवाज, सभ्यता, संस्कृति, देवी–देवताओं के प्रति आस्थाओं से जुड़ी होती हैं। आदिवासी क्षेत्रों के वर्तमान, सामाजिक–आर्थिक दशाओं में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा से संबंधित समस्याएँ अपने गुण व सीमा में अद्वितीय है। इन क्षेत्रों में उचित शिक्षा के अभाव एवं चिकित्सा संबंधी सुविधाओं के पर्याप्त उपलब्ध न हो सकने के कारण मृत्यु एवं बीमारी की दर शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। ग्रामीण समाज में विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में शिशु मृत्यु की घटना व्यापक स्तर पर पायी जाती है।

बैगा जनजाति पिछड़े क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ वातावरण जनजीवन के लिए समान्य नहीं है। धरातलीय बनावट, जलवायु, कृषि, परिवहन का समुचित विकास न होने व शिक्षा का अभाव के कारण, गरीबी रेखा के नीचे जीवन निर्वाह कर रही है। ऐसी स्थिति में बैगा न तो अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रख पाते हैं और न ही पर्यावरण स्वच्छता का।

विकास की परंपराओं में आज भी बैगा आदिवासी शैक्षणिक दृष्टि से शून्य हैं। आर्थिक रूप से कृषि मजदूरी करके जीवन निर्वाह करना होता है। वह विभिन्न विकास कार्यक्रमों के विभिन्न आयामों से अनभिज्ञ हैं और उनसे मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से आज भी वंचित हैं। आदिवासी अंचलों में मलेरिया का प्रकोप अधिक होता है। बारिश के मौसम में मलेरिया के मरीजों की संख्या में भी वृद्धि होती है। इसलिए ऐसे क्षेत्रों में मरीजों की जाँच करने के लिए आशा कार्यकर्ताओं को किट प्रदान किए जा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग द्वारा मलेरिया उन्मूलन के लिए लगातार प्रयास भी किए जा रहे हैं। जिससे ग्रामीण बैगा आदिवासी जन समुदाय इससे लाभान्वित हो सकेगी।

शासन द्वारा बैगा समुदाय के उत्थान के लिए प्रयास करने का निर्णय लिया गया है। आदिवासी बैगाओं के विकास व उत्थान के लिए उन्हें गोद लेने की प्रक्रिया की जा रही है, जिसमें उनके मूलभूत सुविधाओं से लेकर अन्य सभी समस्याओं का निराकरण के लिए प्रशासन द्वारा प्रोजेक्ट तैयार किया जा रहा है। बैगा आदिवासी वनग्राम विकास की दृष्टि से काफी पिछड़े हुए हैं। इन गाँवों के विकास के लिए शासन द्वारा शासकीय बजट के अनुसार प्रोजेक्ट तैयार किया जा रहा है, जिससे बैगा आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों का विकास संभव हो सकेगा।

निष्कर्ष –

बैगा जनजाति मध्यप्रांत के जनजातियों में विशेष स्थान रखता है। विशेष पिछडी जनजाति होने के कारण बैगा जनजाति को सरकार का संरक्षण प्राप्त है जिसके फलस्वरूप इस जनजाति के लिए अनेक शासकीय योजनाएं चलाए जा रहे हैं। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन बैगाओं की संस्कृति भी है। इनके जीवन स्तर में सुधार के लिए शासन विविध योजनाएं भी चला रही हैं। जिससे ये आधुनिक जीवन के प्रमुख पायदान से संपर्क में आ सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

- अटल, योगेश, दुबे, डॉ. श्यामचरण (1965), ''आदिवासी भारत'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
- आदिवासी पत्रिका (1966–67), ट्राइबल रिसर्च ब्यूरो, उड़ीसा, खण्ड– 8.
- अग्रवाल, पी.सी. (1987), दण्डकारण्य ''मध्य प्रदेश के प्रादेशिक भूगोल'', हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
- आवातरामानी, सुरेश (1989), ''बैगा आदिवासी, सामाजिक–आर्थिक कल्याण के प्रयास'', मध्य प्रदेश संदेश, 10 मई।
- बैगा विकास परियोजनाः एक रिपोर्ट, बैहर (मध्य प्रदेश), 1991.
- चौरसिया, विजय (2004), ''प्रकृति पुत्र बैगा'', मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
- कटारे, एस.एस. (2001), ''द बैगास'', मीनाक्षी पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

डॉ. मीनाक्षी मेरावी
सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर, रीवा (म.प्र.)